सस्ती चीनी से मिलों का फोकस एथनॉल पर

2013-14 शुगर ईयर लगातार चौथा ऐसा साल है, जब शुगर का सरप्लस प्रॉडक्शन हुआ

[जयश्री भोंसले *पुणे*]

महाराष्ट्र की शुगर को-ऑपरेटिव्स के करीब 250 प्रतिनिधि गन्ने से ज्यादा एथनॉल पैदा करने की तकनीक सीख रहे हैं। इस साल ज्यादा चीनी और इससे इसकी गिरती कीमतों की समस्या से जूझ रही मिलों को लग रहा है कि 2014-15 में भी लगातार पांचवें साल शुगर प्रॉडक्शन ज्यादा रह सकता है। मिलों ने अगले साल इस चुनौती से निपटने के उपायों पर अभी से काम शुरू कर दिया है।

2013-14 शुगर ईयर लगातार चौथा ऐसा साल है, जब शुगर का सरप्लस प्रॉडक्शन हुआ है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के मैनेजिंग डायरेक्टर अविनाश वर्मा ने इस बारे में कहा, 'गन्ने की कीमत अभी भी इतनी ज्यादा है कि किसान दूसरी फसलों की ओर शिफ्ट नहीं कर रहे हैं। गन्ने की तुलना किसी दूसरी फसल से नहीं की जा सकती।' सूखे के बावजूद महाराष्ट्र में 2013-14 में करीब 80 लाख टन शुगर प्रॉडक्शन की उम्मीद है। महाराष्ट्र स्टेट को-ऑपरेटिव शुगर फैक्ट्रीज फेडरेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर संजीव बाबर के मुताबिक, 'हमें अगले साल गन्ने के रकबे में भारी इजाफे की उम्मीद है।'

बाबर के मुताबिक, 'एक्सपर्ट्स का कहना है कि 2014-15 में महाराष्ट्र में शुगर प्रॉडक्शन 100 लाख टन तक पहुंच सकता है।' ऐसे में इंडियन शुगर इंडस्ट्री ब्राजीलियाई मॉडल को अपनाने की संभावनाएं तलाश रही है। ब्राजील दुनिया में सबसे ज्यादा शुगर का उत्पादन करता है। जब वहां चीनी की कीमत कम होती है, तो मिलें एथनॉल का प्रोडक्शन बढ़ा देती हैं। एथनॉल को शीरे से बनाया जाता है, जो शुगर का बाय-प्रॉडक्ट है। वसंतदादा शुगर इंस्टिट्यूट (वीएसआई), पुणे के एथनॉल के टेक्निकल एक्सपर्ट एस वी पाटिल ने बताया, 'सामान्य शीरा यूज करने के बजाय हम बी-हेवी शीरे से एथनॉल बनाने की सलाह दे रहे हैं। इससे शुगर रिकवरी करीब 1.5-2 फीसदी घट जाती है। बी-हेवी शीरे से एथनॉल प्रॉडक्शन दोगुना होता है।' श्री रेणुका शुगर्स जैसी इंडस्ट्री की दिग्गज कंपनियों के रेप्रेजेंटेटिव्स ने शुगर को-ऑपरेटिव्स को एथनॉल और रॉ शुगर प्रॉडक्शन बढ़ाने के फायदे बताए। इस्मा ने भी बी-हेवी शीरे का इस्तेमाल करने की सलाह मिलों को दी है, ताकि शुगर की सप्लाई बढ़ने से इसकी कीमतों में होने वाली गिरावट को रोका जा सके। महाराष्ट्र स्टेट को-ऑपरेटिव शुगर फैक्ट्रीज फेडरेशन के चेयरमैन विजयसिंह मोहित पाटिल ने कहा, 'हम केवल यह चाहते हैं कि शुगर मिलें बी-हेवी शीरे का इस्तेमाल करने की टेक्निकल जानकारी हासिल करें। इस प्रोसेस में एथनॉल की प्रॉडक्शन कॉस्ट बढ़ जाती है, इससे यह मिलों पर है कि वे कौन का तरीका इस्तेमाल करती हैं।'

ज्यादा रहेगा प्रोडक्शन

- ज्यादा चीनी और गिरती कीमतों की समस्या से जूझ रही मिलों को लग रहा है कि 2014-15 में भी पांचवें साल शुगर प्रॉडक्शन ज्यादा रह सकता है
- इस्मा ने बी-हेवी शीरे का इस्तेमाल करने की सलाह दी है, ताकि शुगर की सप्लाई बढ़ने से इसकी कीमतों में होने वाली गिरावट को रोका जा सके

Economic Times
26/11/13